कुम्भ स्नान - 2010

मुकेश कुमार शर्मा
जूनियर इंजीनियर (वरिष्ठ ग्रेड)

लगा कुम्भ गंगा के तट पर, सारा विश्व जगेगा
कलिकाल में, सतयुग जैसा अमृत कहाँ मिलेगा ।
पापग्नि से झुलस रहे, तन-मन दग्ध हुए हैं,
क्रियामान, संचित कर्मो के, काले प्रारब्ध हुए हैं
क्यों सोता है अज्ञानी बन, कब ज्ञानी बना जगेगा
लगा कुम्भ गंगा के तट पर, सारा विश्व जगेगा
कलिकाल में, सतयुग जैसा अमृत कहां मिलेगा ।।-1

कुछ छलकी थी बूंदें यहाँ पर, ऐसा लिखा पुराणों में
भूल गये इस कथा को आकर, कलि के काले कारनामों में,
धुल जायेंगे सारे धब्बे, गोता जब पावन लगेगा
लग कुम्भ गंगा के तट पर, सारा विश्व जगेगा
कलिकाल में, सतयुग जैसा अमृत कहाँ मिलेगा ।।-2

सोच रहे थे हम भी जाकर, कुम्भ स्नान करेंगे ,
जो थोड़ी सी भीड़ से डरते, करोड़ों में कहाँ फिरेंगे,
हिम्मत वाले लगा रहे हैं, डरपोक यों ही डरेगा ।
लगा कुम्भ गंगा के तट पर, सारा विश्व जगेगा ।
कलिकाल में सतयुग जैसा अमृत कहाँ मिलेगा ।।-3

पाना है यदि सच्चा अमृत, गोता लगा हिमानी में
फिर देखना कैसा अनुभव, इस बहते हुए है पानी में
भूल जायेगा मोह माया को, तेरा सच्चा ज्ञान जगेगा ,
लगा कुम्भ गंगा के तट पर, सारा विश्व जगेगा
कलिकाल में, सतयुग जैसा अमृत कहाँ मिलेगा ।।-4

गुड-गुड कहता फिर चारो ढिंग, मुंह मीठा नहीं होगा
बिना मरे यहाँ स्वर्ग का दर्शन, नहीं किसी को होगा
अनुभव कर खुद लगा के गोता, तर्क ना कोई चलेगा
लगा कुम्भ गंगा के तट पर सारा विश्व जगेगा
कलिकाल में, सतयुग जैसा अमृत कहाँ मिलेगा ।।-5

मुकेश नहाकर देख यहाँ, तेरी बदल जायेगी काया
छूटे सारे पाप के बण्डल, मिले हरिनाम की माया
उसकी कृपा से लगता है, गोता कर्महीन का नहीं लगेगा
लगा कुम्भ गंगा के तट पर, सारा विश्व जगेगा
कलिकाल में, सतयुग जैसा अमृत कहाँ मिलेगा ।।-6